

ग्रसाधारण

### EXTRAORDINARY

भाग I--खाउ I

PART I-Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

### PUBLISHED BY AUTHORITY

do 114] No. 114] नर्ष विल्ली, मंगलवार, ग्रगःत 15, 1967/ब्रावग 24, 1889 NEW DELHI, TUESDAY, AUGUST 15, 1967/SRAYANA 24, 1889

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह भ्रत्या संकलन के कप में एखा जा सके। Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

#### MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue and Insurance)

NOTIFICATION

New Delhi, the 15th August 1967

No. 31/7/67-Ad.IIIB.—The President is pleased, on the occasion of Independence Day, 1967, to award Posthumously an Appreciation Certificate to the undermentioned officer of the Collectorate of Central Excise, Bombay, for exceptionally meritorious service rendered when undertaking a task even at the risk of his life:—

Name of the officer and rank:

Late Shri Jayant Sitaram Patole, Inspector of Central Excise.

Statement of services for which the Certificate is awarded:

On 24th February, 1967, Shri Patole, Inspector, Flying Squad, Shriwardhan, received information that a person had landed from Kutchi-Kotia Vessel carrying contraband from Dubai near Shriwardhan and was making arrangements for transhipment of goods and for this purpose was proceeding by the State Transport Bus to Bombay. Shri Patole, along with the staff, rushed to the State Transport Bus stop, detained one person named Ahmed Siddique and seized some documents from him. Shri Patole conveyed this information telegraphically to his senior officers and sought assistance. In the meantime, on receiving further information that some persons from the vessel would land in search of Ahmed Siddique, he,

with a view to keeping a watch over these persons, formed two groups—one led by himself at Pir and the other at the Custom House near the Jetty. The latter party was to be ready to rush to the spot immediately after getting a signal from him and intercept the suspected vessel. Accordingly, Shri Patole with his party preceded to Haji Maskit Pir Darga. Shriwardhen, on the night of 25th February 1967, while the other party kept watch over the sea shore at a distance of about three miles.

In the early hours of 26th February 1967. Shri Patole and his party saw four persons arriving at Darga and thereupon he challenged them and apprehended two persons while the other two ram away. Shri Patole immediately ran after them, followed by the Sub-Inspector Shri Bodlani (who was it some distance behind him), overtook them in the adjoining jungle and had a scuffle with them. One of the smugglers thereupon opened fire and Shri Patole too returned the fire with his revolver. Finally, one of the smugglers shot him in the abdomen injuring him seriously. The two smugglers ran away with his 380 revolver and Shri Patole was rushed to the hospital. All efforts were made to save his valuable life but to no avail, and Shri Patole unfortunately died on 3rd March 1967. In this operation, the late Shri Patole displayed a keen sense of resourcefulness and conspicuous bravery of a very high order. He performed his duty even at the risk of his life.

2 The award is made under clause (a)(i) of parn 1 of the Scheme governing the grant of award to the officers and stoff of the Customs, Central Excise and Land Customs Departments published in Part I Section 1 of the Gazette of India Extraordinary Notification No. 12/139/59-Ad. IIIB. dated the 5th November, 1962, and consequently carries with it the monetary allowance admissible to his widew Rs. 25 p.m., for a period of ten nears or till re-marriage of the widow, whichever is earlier under clause (b) of the Notification ibid read with clause (g) thereof as amended nide Government of India Ministry of Finance (Department of Revenue) Notification No. 31/12/65-Ad IIIB dated the 27th November, 1965 published in Part 1. Section 1 of the Gazette of India dated Saturday, the 27th November, 1965. The monetary allowance will be admissible from the date of the incident viz. 26th February, 1967.

D. P. ANAND, Addl. Secy.

## विस मंत्रालय

# (राजाव तथा वीमर विभाग)

# श्रधिसूचना

# नई दिल्ली, 15 भ्रगस्त 1967

सं० 31/7/67-एडी-IIIबी -- स्वदः त्रला दिवस, 1967 के श्रवसर पर केन्द्रीय जत्मादन शुल्क समाहर्ना-कार्यालय बस्बई के निम्निलिखित श्रफमर को, श्रपने जीवन को भी संकट में डालने वाला कार्य करने हुए की गई श्रमाधारण प्रणयन सेवा के लिये राष्ट्रपति जी यह प्रशंसा प्रमाण-पत्र उक्त श्रधिकारी को मरणोपरान्त प्रदान करते हैं:--

## द्यकतर का नाम और पव

स्वर्गीय श्री जयन्त्र मोताराम पताले, निरीक्षक केन्द्रीय उत्पादन शुल्क

# जिन सेवःश्रों के लिये प्रमाग-पत्रविधा गया उपका विवर गः

24 फरवरी 1967 को श्री पतीले जिरीक्षक, धावक दस्ता, श्रीवर्धन को यह सूचना प्राप्त हुई कि दुवाई से निधिद्ध वस्तुओं को साथ लेकर एक व्यक्ति कुत्वी-कोटिया जलयान से श्रीवर्धन के निकट उत्तरा था और माल को प्रत्य यान द्वारा भेजने की व्यवस्था कर रहा था तथा इस उद्देश्य से वह राज्य परिवड़न क्षम से बम्बई जा रहा था। श्री पतील श्रपने वर्भचारियों के साथ राज्य परिवहन बस के श्रहुं की श्रीर तेजी से भागे, श्रीर श्रहमद सिद्दीक नामक व्यक्ति को रोका तथा उसके पास से कुछ कागज

पकड़े। श्री पतोले ने यह सूचना तार द्वारा श्रयने वरिष्ठ श्रधिकारियों तक पहुंचाई श्रीर मदद मांगी। इसी बोच, यह श्रतिरिक्त सूचना मिलने पर कि जलयान पर से कुछ व्यक्ति श्रहमद सिद्दीक की खोज में उत्तरेंग, श्री पतोले ने इन व्यक्तियों पर निगरानी रखने के लिये दो दल बनाये। एक दल स्वयं श्री पतोले के नेतृत्व में पीर दरगाह पर रहा श्रीर दूसरा दल जटी के पास सीमाणुल्क गृह पर रहा। दूसरे दल को श्री पतोले में संकेत मिलते ही तुरन्त घटनास्थल पर जाने की तैयार रहना था श्रीर संदिग्ध जलयान को मार्ग में रोकना था। तदन्यार, श्री पतोले श्रयने दल के साथ 25-2-1967 की रात को श्रीवर्धन-स्थित हाजी मस्किट पीर दरगाह के वहां गये श्रीर दूसरा दल करीब तीन मील दूर समुद्र तट की निगरानी पर रहा।

26-2-1967 के बड़ सबरे श्री पतीले तथा उनके दल ने दरगाह पर चार व्यक्तियों को आते देखा श्रीर देखते ही श्री पतीले ने उन्ह टोका तथा दो व्यक्तियों को हिरासत में ले लिया, जितने में अन्य दो व्यक्ति भाग चले श्री पतीले ने उन्ह टोका तथा दो व्यक्तियों को हिरासत में ले लिया, जितने में अन्य दो व्यक्ति भाग चले श्री पतीले ने उनके पीछ भाग। श्री पतीले ने पास ही के जंगल में उनको जा पकड़ा श्रीर वह उनके साथ गुत्थसगृत्था हो गये। इस पर एक तस्कर ने गोली चलाई श्रीर श्री पतीले ने भी श्रमने रिवास्वर से जवाब में गोला चलाई। श्रीखरकार एक तस्कर ने श्री पतीले के पेट में गोली मार दी जिससे वह गुरी तरह घायल हो गये। दोनों तस्कर श्री पतीले के .380 रिवास्वर को लेकर भाग गये। श्री पतीले को श्रमपताल ले जाया गया। उनके श्रमूल्य जीवन को बचाने के लिये पूरी कोशिश को गयी किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। श्रीर दुःख है कि श्री पतीले का 3 मार्च 1967 को स्वर्गवास हो गया। इस कार्यवाही में स्वर्गीय श्री पतीले ने श्रपनी प्रखर मूअ-बूझ एवं उच्च कोटि की विशिष्ट वीरता दिखाई श्रीर श्रपने जीवन को भी जोखिस में डालकर श्रपने कर्त्वय का पालन किया।

2. यह पुरस्कार सोमाणुल्क, केन्द्रीय उत्पादन णुल्क तथा स्थल सीमा णुल्क विभागों के अफमरों और कर्मनित्यों को पुरस्कार देने से संबंधित योजना की कण्डिका I के खण्ड (क) (I) के अन्तर्गत दिया जाता है। यह योजना भारत के गजट असाधारण के भाग I खण्ड 1 में अधिसूचना संख्या 12/139/59-एड़ी-बी दिनाक 5 नवस्बर 1962 के रूप में प्रकाशित हुई थी तथा इसी के खण्ड (ख) के अतिर्गत उनके बण्ड (छ) के साथ पाँठत योजना के अनुसार, जैसा कि भारत सरकार, वित्त मंत्रालय राजस्व विभाग) की अधिसूचना संख्या 31/12/65-एड़ी-III-बी, दिनांक 27 नवस्बर 1965 द्वारा संशोधित की गई थी जो भारत के गज्य के भाग I खण्ड 1 में शानिवार, 27 नवस्बर 1965 को प्रकाशित हुई थी, 10 वर्ष की अवधि के लिये प्रयवा विधवा के पुनिवाह करने तक, जो भी पहले हो, 25 रुपये प्रतिसाह की दर से उनकी विधवा को देय विनीय भन्ता मिलने की मंजूरी भी इसमें निहित है। विनीय भन्ता घटना की तारीख शर्थात 26 फरवरी, 1967 से मिलेगा।

धर्म प्रकाण ग्रानन्द, ग्रतिरिक्त सचिव।